IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# मुस्लिम महिलाओं की अधिकारों के प्रति राजनीतिक चेतना का अध्ययन

**(उज्जैन शहर के विशेष संदर्भ में)**

[1]**शोध छात्रा :- अफसाना मंसूरी,** राजनीति विज्ञान एवं लोकप्रशासन अध्ययनशाला विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

[2]**निर्देशक :- डॉ. मंगलेश्वरी जोशी, प्राध्यापक,** शा. कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रतलाम (म.प्र.)

[3]**सह निर्देशक:- डॉ. दीपिका गुप्ता, आचार्य,** राजनीति विज्ञान एवं लोकप्रशासन अध्ययनशाला विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

**सारांश :-** भारत में महिलाओं के विकास के लिए अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक कारक प्रभावित करते है। अनेक भारतीय संवैधानिक व कानूनी प्रावधानों के बावजूद भी भारतीय समाज की परम्परागत पृष्ठभूमि महिलाओं को राजनीति में आने से रोकती रही है। स्वतंत्रता के पश्चात् महिलाओं की स्थिति में क्रान्तिकारी बदलाव देखा गया है। परन्तु मुस्लिम समुदाय की महिलाओं में जो परिवर्तन हुआ है। उनकी जनसंख्या के हिसाब से बहुत कम है। बाल–विवाह अभी भी मुस्लिम समुदाय की निम्न जातियों में देखा जा सकता है और पर्दाप्रथा आज भी विद्यमान है। शिक्षा के स्तर में भी अधिक बदलाव नहीं आये है। मुस्लिम समाज की महिलाओं में परिवर्तन आया है, लेकिन यह नाम मात्र का परिवर्तन माना गया है।

आधुनिक लोकतान्त्रिक भारत युग में यह महत्वपूर्ण तथ्य उभरकर आया है कि महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्तर, महिलाओं के विकास की व्यवहारिकता ही नहीं बल्कि जरूरत भी है और महिलाओं ने भी अवसर मिलने पर सदैव स्वयं को सिद्ध किया है। महिलाएँ सदैव परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने में अद्भुत क्षमता रखती है। वहाँ समान अवसर एवं समान परिस्थितियाँ मिलने पर महिलायें अपनी भूमिका हर क्षेत्र में सिद्ध कर सकती है। भारत एवं सम्पूर्ण विश्व में लोकतांत्रिक व्यवस्था का इतिहास नारी के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक अधिकारों की संघर्षगाथा का भी एक उज्जवल पिड़ी है। वर्तमान समय में महिलाओं ने अपनी योग्यताओं एवं क्षमताओं के बल से प्रत्येक क्षेत्र में अपने आपको सफल सिद्ध किया है। सम्पूर्ण विश्व में महिलाओं की संख्या पचास प्रतिशत है लेकिन व्यवस्थापिकाओं ने इस ''आधी दुनिया'' का प्रतिनिधित्व औसतन लगभग 11.7 प्रतिशत ही है। जो एक खतरनाक संकेत देता है। इस स्थिति के मद्देनजर यदि भारत में मुस्लिम अल्पसंख्यक वर्ग भी महिलाओं को देखा जाये तो इनकी स्थिति और भी निराशाजनक प्रतीत होती है। भारत में सबसे बड़ा अल्पसंख्यक वर्ग की मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्तर को आसानी से समझ सकते है।

**Keywords -: मुस्लिम समुदाय, मुस्लिम महिलाओं, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति, धार्मिक शिक्षा,** **प्रस्तावना :–** अधिकार का सामान्य आशय उन सुविधाओं और परिस्थतियों से है। जो सभ्य समाज के एक सदस्य के रूप में व्यक्ति के सर्वागीण विकास के लिए आवश्यक है।[1] प्राचीनकाल के समय नारी के सम्बन्ध में केवल यह धारणा थी कि **''यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता''** लेकिन पुरूष प्रधान सामाजिक व्यवस्था और राजनीतिक बदलावों के कारण धीरे–धीरे नारी की स्थिति बदलती गई है

परन्तु आज के समय 21वीं सदी की नारी कानून की दृष्टि में अब अबला नहीं सबला है। पुरूष जगत का अब ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित हुआ है कि नारी भी विश्व जीवन का उतना ही अतिआवश्यक और महत्वपूर्ण अंग है। जितना आय के समय पुरूष है वह पुरूष की वासना–तृष्टि का एक मात्र साधन नहीं है। बल्कि वह जाननी, सहचारी एवं मार्गदर्शिका भी है। संविधान में सभी नागरिकों के साथ–साथ महिलाओं को भी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक अधिकार प्रदान करता है। संविधान निहित रूप से यह उम्मीद रखता है कि सरकार सभी कमजोर वर्गों के लोग

और महिलाओं भी शामिल करता है और उनकी स्थिति को सुधारने के लिए विशेष प्रयत्न करेगी। सरकार ने अलग–अलग अधिनियमों द्वारा महिलाओं से संबंधित काननू बनाये है और समय–समय पर इनमें संशोधन भी हुए है।

प्राचीनकाल से ही हमारे देश में महिलाओं के प्रति आदर भाव से देखा जाता है और आज भी हमारे समाज में महिलाओं को एक विशेष दर्ज प्रदान किया जाता है। इसके साथ संविधान द्वारा भी महिलाओं को विशेष अधिकार प्रदान किये गये है। ताकि वे अपना विकास कर सकें। आज के समय हमारे देश में 70 प्रतिशत जनता गाँवों में निवास करती है। जिसमें से आधी महिलाएँ शामिल है जो अशिक्षित, रूढ़िवादिता, अंधविश्वासों को जकड़ी हुई है।

मुस्लिम आबादी भारत की आजादी के समय लगभग 3.032 करोड़ थी, परन्तु 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में मुस्लिम आबादी 14.87 प्रतिशत हो गई है। आज के समय भारत में धर्म पर आधारित सबसे बड़ो धार्मिक अल्पसंख्यक वर्ग मुस्लिम सम्प्रदाय का ही है। अतः मुस्लिम महिलाओं का सामाजिक, राजनीतिक एवं शैक्षणिक उत्थान समुचित रूप से तभी होगा जब उन्हें पुरूष के बराबर समानता का अधिकार प्रदान किया जायेगा।[2]

इस्लाम में पहले महिलाओं की स्थिति बहुत ही दयनीय रही है। परन्तु मोहम्मद साहब के आगमन के पश्चात महिलाओं की स्थिति में बहुत सुधार आया है। परिवार व समाज में महिलाओं का आदर किये जाने लगा है। इस्लाम के अनुसार महिला व पुरूष दोनों एक दूसरे के अभिन्न अंग माने गये है। कुरान के अनुसार यह स्पष्ट है कि स्त्री पुरूष का लिबास (कपड़ा) है। स्त्री के बिना पुरूष अधुरा है। मोहम्मद साहब के आगमन के बाद महिलाओं की स्थिति में चमत्कारी परिवर्तन हुऐ है। फिर भी आज भारत के मुस्लिम समुदाय की सामाजिक, राजनीतिक एवं शैक्षणिक स्थिति, बहुविवाह, तीन तालाक आदि रूढ़िवादी विचारों में जकड़ी हुई है। इस अध्याय में हमनें उज्जैन शहर की मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक– आर्थिक स्तरों का अध्ययन किया है तथा शोधकर्ती द्वारा मुस्लिम समुदाय की महिलाओं के व्यक्तिगत/पारिवारिक–सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि की विस्तृत जानकारी हेतु सम्बन्धित प्रमुख तथ्यों का संकलन प्रस्तुत अध्याय में प्रस्तुत किया गया है।

**मुस्लिम महिलाओं की समस्याओं से सम्बन्धित प्रतिक्रिया :–** मुस्लिम समुदाय में रहकर उनके समक्ष कौन–कौन सी समस्याएँ उत्पन्न हुई है। इस सन्दर्भ में प्राप्त तथ्य निम्न प्रकार है।

**तालिका 1**

**मुस्लिम महिलाओं की समस्याओं से सम्बन्धित प्रतिक्रिया**

| क्रं. | विकल्प | आदर्श नगर, दमदमा, नागझिरी | | तोपखाना बेगमबाग | | कुल योग | कुल प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | अशिक्षा | 17 | 9.45 | 22 | 12.23 | 39 | 10.84 |
| 2. | गरीबी | 14 | 7.78 | 24 | 13.34 | 38 | 10.54 |
| 3. | पर्दाप्रथा | 08 | 4.45 | 11 | 6.12 | 19 | 5.28 |
| 4. | रूढ़िवादिता | 9 | 5 | - | - | 9 | 2.5 |
| 5. | जागरूकता की कमी | 18 | 10 | 6 | 3.34 | 24 | 6.67 |
| 6. | पितृ–सत्तात्मक समाज | 10 | 5.56 | - | - | 10 | 2.78 |
| 7. | बाल विवाह | 12 | 6.67 | 5 | 2.76 | 17 | 4.73 |
| 8. | उपर्युक्त सभी | 19 | 10.56 | 112 | 62.23 | 131 | 36.38 |
| | **कुल योग** | **180** | **100%** | **180** | **100%** | **360** | **100%** |

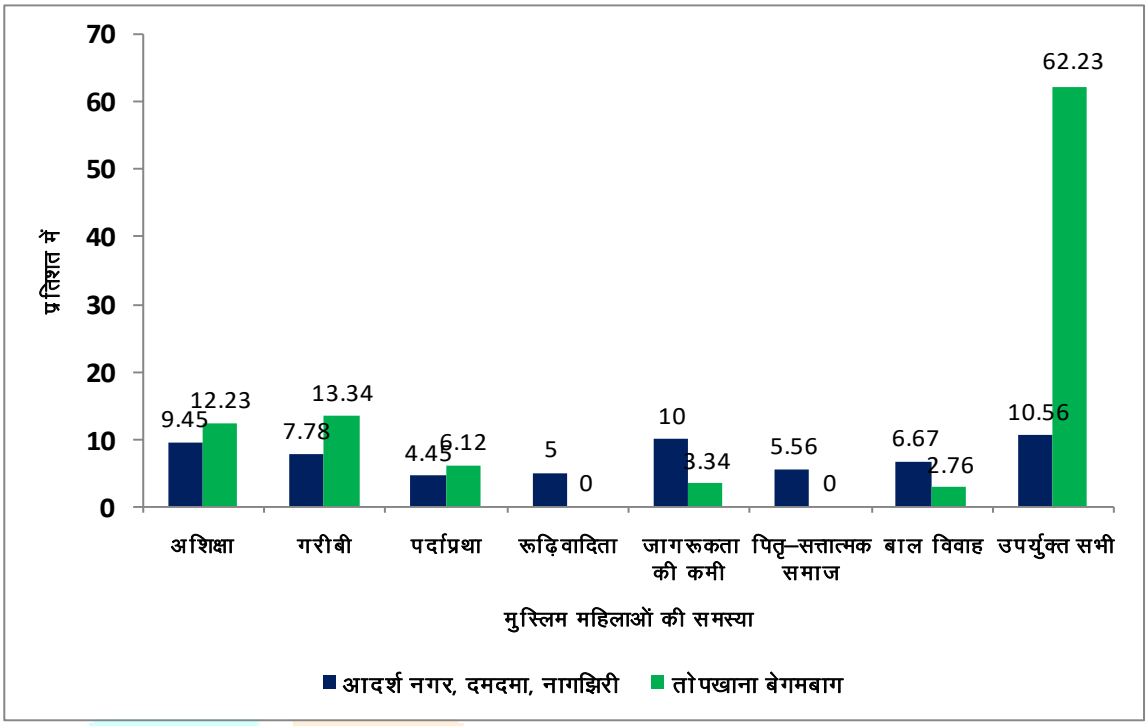


तालिका 1 के तथ्यों के विश्लेषण से यह पता चलता है कि आदर्शनगर, नागझिरी, दमदमा की 9.45 प्रतिशत व तोपखाना, बेगमबाग की 12.23 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने यह माना है कि उन्हें मुस्लिम महिला के रूप में शिक्षा से वंचित रखा गया है। वही आदर्शनगर क्षेत्र की 7.78 प्रतिशत व तोपखाना क्षेत्र की 13.34 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने कहा है कि उन्हें मुस्लिम महिला के रूप में गरीबी से सम्बन्धित समस्या उत्पन्न हुई है। वह आदर्शनगर क्षेत्र की 4.45 प्रतिशत व तोपखाना क्षेत्र में 6.12 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं का मानना है कि उन्हें मुस्लिम महिला के रूप में पर्दाप्रथा सम्बन्धित समस्या उत्पन्न हुई है। वहीं दूसरी ओर प्राप्त आँकड़ों से हमें यह पता चलता है कि रूढ़िवादिता से सम्बन्धित महिला के रूप में जागरूकता की कमी से सम्बन्धित समस्या उत्पन्न हुई है और इसके अलावा आदर्शनगर क्षेत्र में 5.56 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने कहा कि उन्हें मुस्लिम महिला के रूप में पितृसत्तात्मक समाज में समस्याएं उत्पन्न हुई है और आदर्शनगर की क्षेत्र 6.67 प्रतिशत व तोपखाना क्षेत्र की 2.72 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं के रूप में बाल विवाह से सम्बन्धित समस्या उत्पन्न हुई है और मुस्लिम महिला के रूप में उपर्युक्त सभी समस्याओं पर सहमति व्यक्त करने वाली मुस्लिम महिलाऐं आदर्शनगर क्षेत्र की 10.56 प्रतिशत व तोपखाना क्षेत्र की 62.23 प्रतिशत है। इस प्रकार प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि दोनों क्षेत्रों की मुस्लिम महिलाऐं की समस्याओं की प्रकृति व समस्याओं पर मत लगभग एक समान है।

महिला के रूप में राजनीति में उदासीन होने के कारणों की प्रतिक्रिया :–

तालिका 2

मुस्लिम महिला के रूप में राजनीति से उदासीनता सम्बन्धित प्रतिक्रिया

| क्रं. | विकल्प | आदर्श नगर, दमदमा, नागझिरी | | तोपखाना बेगमबाग | | कुल योग | कुल प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | समाज में राजनीतिक आकांक्षा न होना | 23 | 12.78 | 17 | 9.45 | 40 | 11.12 |
| 2. | धन का अभाव होना | 16 | 8.89 | 20 | 11.12 | 36 | 10 |
| 3. | महिला के रूप में घर की जिम्मेदारियाँ | 9 | 5 | 16 | 8.89 | 25 | 6.94 |
| 4. | राजनीति महिला स्वभाव के विपरीत | 4 | 2.23 | 8 | 4.45 | 12 | 3.34 |
| 5. | वर्तमान राजनीति परिप्रेक्ष्य महिलाओं के लिये अनुपर्युक्त | 13 | 7.23 | 7 | 3.89 | 20 | 5.56 |
| 6. | उपर्युक्त सभी कारण | 97 | 53.89 | 108 | 60 | 205 | 56.95 |
| 7. | महत्वपूर्ण नहीं समझा | 18 | 10 | 4 | 2.23 | 22 | 6.12 |
| | **कुल योग** | **180** | **100%** | **180** | **100%** | **360** | **100%** |

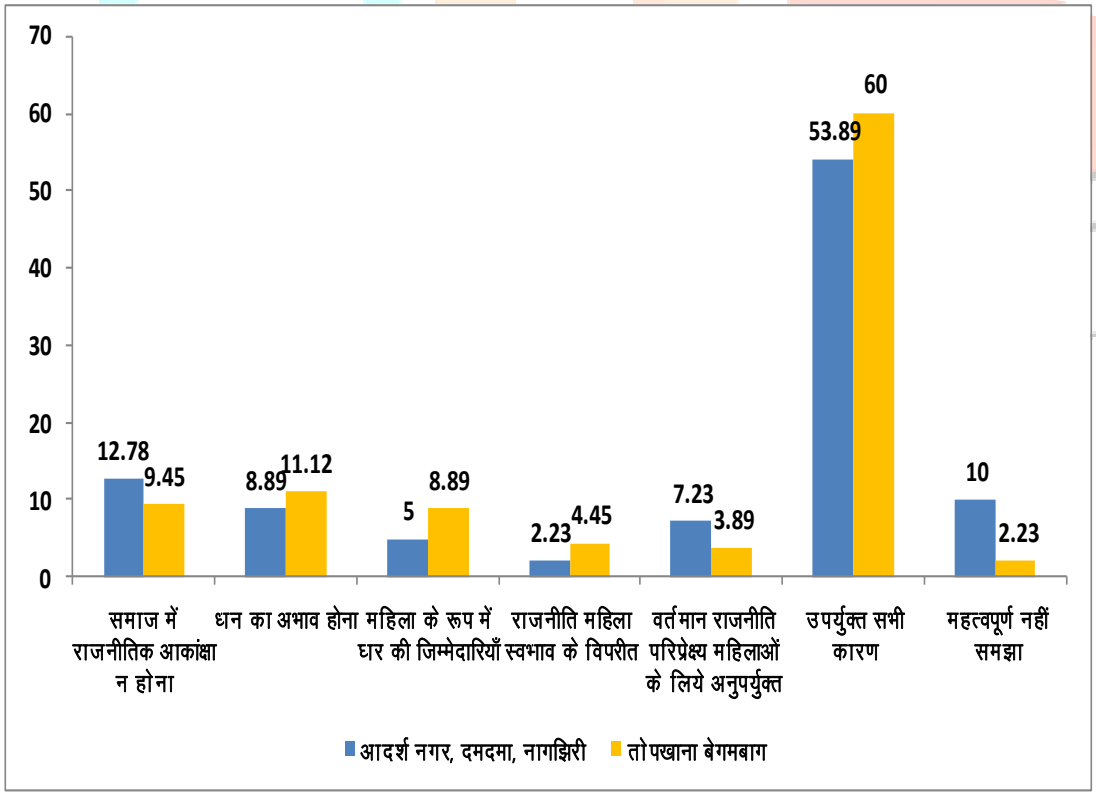


तालिका 2 के तथ्यों के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि आदर्शनगर, दमदमा, नागझिरी क्षेत्र की 12.78 प्रतिशत व तोपखाना, बेगमबाग क्षेत्र की 9. 45 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने कहा है कि वह मुस्लिम महिलाओं के रूप में राजनीति के प्रति उदासीन होने के कारण राजनीति आकांक्षा नहीं होती है और कुल मुस्लिम महिलाओं जैसे कि आदर्शनगर क्षेत्र की 5 प्रतिशत व तोपखाना क्षेत्र की 8.89 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने कहा है कि महिला के रूप में राजनीति के प्रति उदासीन होने का कारण यह भी है कि भारत की राजनीति महिला स्वभाव के विपरीत होना पाया गया है। वह आदर्शनगर, दमदमा, नागझिरी क्षेत्र को 7.23 प्रतिशत व तोपखाना की 3.89 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने कहा है कि महिला के रूप में

राजनीति के प्रति उदासीन होने के कारण यह भी है कि वर्तमान में राजनीतिक परिप्रेक्ष्य महिलाओं के लिए अनुपयुक्त हो गया है और लगभग 56.95 प्रतिशत कुल महिलाये ऐसी थी जो राजनीति के प्रति उदासीनता हेतु उपर्युक्त सभी कारणों को जिम्मेदार मानती है और इसके साथ–साथ आदर्शनगर क्षेत्र की 10 प्रतिशत व तोपखाना क्षेत्र की 22 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने इस कथन पर कोई प्रक्रिया नहीं दिखाई है। इन महिलाओं ने अपने जीवन में राजनीति में आने का कभी सोचा भी नहीं है। तोपखाना क्षेत्र में शिक्षा, धार्मिक गतिविधियों में लिप्त जीवन व्यापन कर रही ज्यादातर मुस्लिम महिलाओं का राजनीतिक वातावरण से कोई लेना–देना नहीं प्रकृत किया है।

**मुस्लिम महिलाओं में लैंगिंक भेदभाव किये जाने के विषय में प्रतिक्रिया :–**

तालिका 3

लैंगिंक भेदभाव किये जाने के सम्बन्ध में प्रतिक्रिया

| क्रं. | विकल्प | आदर्श नगर, दमदमा, नागझिरी | | तोपखाना बेगमबाग | | कुल योग | कुल प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | शिक्षा सुविधा में | 13 | 7.14 | 12 | 6.67 | 25 | 6.95 |
| 2. | पहनावे के सम्बन्ध में | 10 | 5.56 | 3 | 1.67 | 13 | 3.62 |
| 3. | घर के कार्यों में | 6 | 3.34 | 8 | 4.45 | 14 | 3.89 |
| 4. | मस्जिद में नमाज हेतु | 12 | 6.67 | 13 | 7.23 | 25 | 6.95 |
| 5. | घर से बाहर जाने पर | 18 | 10 | 3 | 1.67 | 19 | 5.28 |
| 6. | व्यक्तिगत रूचि में | 8 | 4.45 | 6 | 3.34 | 14 | 3.89 |
| 7. | मनोरंजन से सम्बन्ध में | 5 | 2.78 | 7 | 3.89 | 12 | 3.34 |
| 8. | विचार अभिव्यक्ति सम्बन्धित | 9 | 5 | 11 | 6.12 | 20 | 5.56 |
| 9. | विकास के अवसर प्रदान करने में | 2 | 1.12 | 8 | 4.45 | 10 | 2.78 |
| 10 | उपर्युक्त सभी विषय | 97 | 53.89 | 109 | 60.56 | 206 | 57.23 |
| | **कुल योग** | **180** | **100%** | **180** | **100%** | **360** | **100%** |

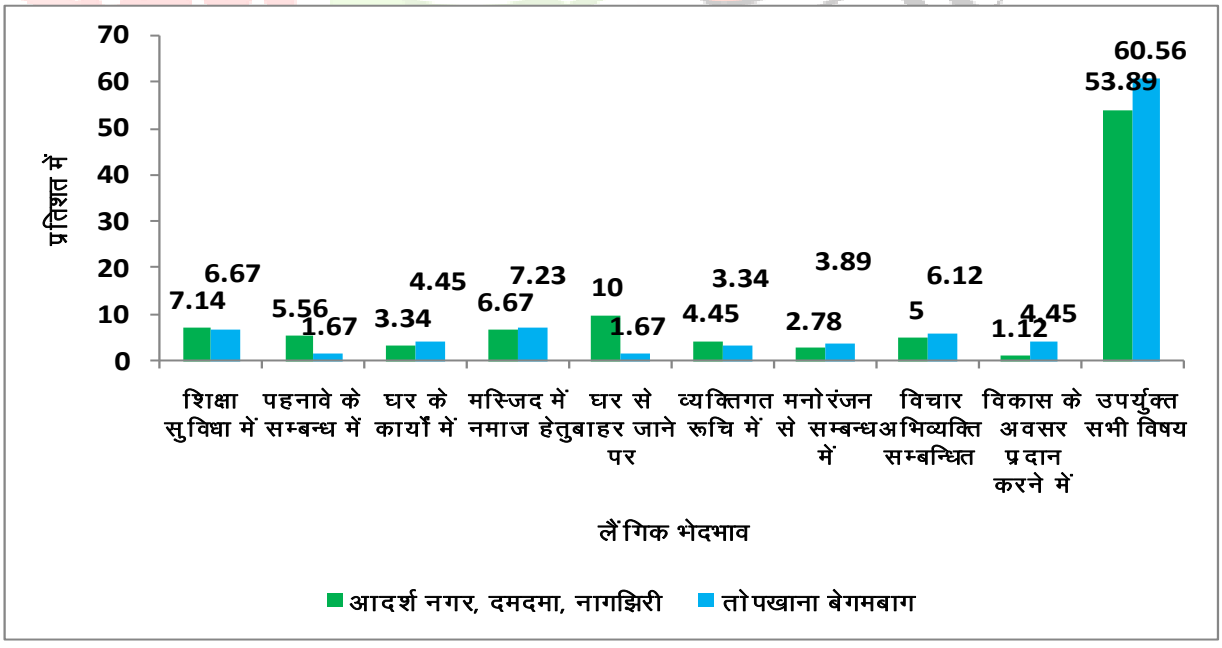


तालिका 3 के प्राप्त तथ्यों के अवकलन से पता चलता है कि आदर्शनगर, नागझिरी, दमदमा के क्षेत्र में 7.14 प्रतिशत व तोपखाना, बेगमबाग 6.67 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने कहा है कि शिक्षा सुविधा के सम्बन्ध में लैंगिंक भेदभाव किया जाता है एक और आदर्शनगर क्षेत्र की और 5.56

प्रतिशत व तोपखाना, बेगमबाग क्षेत्र की 1.67 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने कहा है कि पहनावे से सम्बन्ध में लैगिंक भेदभाव किया जाता है वह उज्जैन जिले की कुल 3.89 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने माना है कि घर कार्यों के सम्बन्ध में लैगिंक भेदभाव किया जाता है और आदर्शनगर क्षेत्र की 6.67 प्रतिशत व तोपखाना क्षेत्र की 7.23 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने कहा है कि मस्जिद में नमाज अदा करने के सम्बन्ध में लैगिंक भेदभाव किया जाता है और कुल आदर्शनगर की 10 प्रतिशत व तोपखाना क्षेत्र की 1.67 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने कहा है कि घर से बाहर जाने के सम्बन्ध में लैगिंक भेदभाव किया जाता है और आदर्शनगर की 4.45 प्रतिशत व तोपखाना, बेगमबाग की 3.34 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने कहा कि व्यक्तिगत रूचि के सम्बन्ध में लैगिंक भेदभाव किया जाता है और आदर्शनगर की 2.78 प्रतिशत व तोपखाना की 3.89 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने कहा है कि मनोरंजन के सम्बन्ध में लैगिंक भेदभाव किया जाता है। उज्जैन शहर की अधिकांश महिलाओं ने सभी क्षेत्रों में लैगिंक भेदभाव सहना स्वीकार किया है। इसका कुल महिलाओ में प्रतिशत 57.23 प्रतिशत या जिसमें आदर्शनगर, दमदमा, नागझिरी क्षेत्र की 53.89 प्रतिशत व तोपखाना, बेगमबाग की 60.56 प्रतिशत महिला सम्मिलित है। इस प्रकार प्राप्त मुस्लिम महिलाओं के आँकड़ों से पता चलता है कि तोपखाना, बेगमबाग की सर्वाधिक मुस्लिम महिलाओं ने कहा कि परिवार में लैगिंक भेदभाव किये जाने के वार्णित उपर्युक्त सभी कारण है।

**मुस्लमानों की नौकरी/तरक्की देने में भेदभाव किये जाने से सम्बन्धित समस्या पर प्रतिक्रिया**

**तालिका 4**

**नौकरी/तरक्की देने में भेदभाव से सम्बन्धित प्रतिक्रिया**

| क्रं. | विकल्प | आदर्श नगर, दमदमा, नागझिरी | | तोपखाना बेगमबाग | | कुल योग | कुल प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | हाँ, मेरे साथ ही हुआ है | 18 | 10 | 28 | 15.56 | 46 | 12.78 |
| 2. | हाँ, मेरे परिजनों में साथ हुआ है। | 23 | 12.78 | 31 | 17.23 | 54 | 15 |
| 3. | मेरे मित्रों/रिश्तेदारों के साथ हुआ | 21 | 11.67 | 54 | 30 | 75 | 20.84 |
| 4. | नहीं, बिल्कुल नहीं हुआ | 49 | 27.23 | 15 | 8.34 | 64 | 17.78 |
| 5. | प्रत्युत्तर नहीं दिया | 69 | 38.34 | 52 | 28.89 | 121 | 33.62 |
| | **कुल योग** | **180** | **100%** | **180** | **100%** | **360** | **100%** |

तालिका 4 के तथ्यों के विश्लेषण से पता चलता है कि आदर्शनगर, नागझिरी, दमदमा की 10 प्रतिशत व तोपखाना, बेगमबाग क्षेत्र की 15.56 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने माना है कि उनके साथ भेदभाव किया गया है और इसके साथ उनके परिजनों के समक्ष भेदभाव की परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई है जो कि आदर्शनगर की 12.78 प्रतिशत व तोपखाना, बेगमबाग की 17.23 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने सहमति दी है और आदर्शनगर की 11.67 प्रतिशत व तोपखाना क्षेत्र की 30 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने माना है कि उनके मित्रों/रिश्तेदारों के साथ नौकरी में भेदभाव किया गया था। वही आदर्शनगर की 27.23 प्रतिशत व तोपखाना, बेगमबाग क्षेत्र की 8.34 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने माना है कि उनके परिजनों के साथ ऐसा बिल्कुल नहीं हुआ है और वही उज्जैन शहर की कुल मुस्लिम महिलाओं में से 33.62 प्रतिशत महिलाओं ने कोई उत्तर नहीं दिया है क्योंकि उन्हें इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं देना उचित समझा।

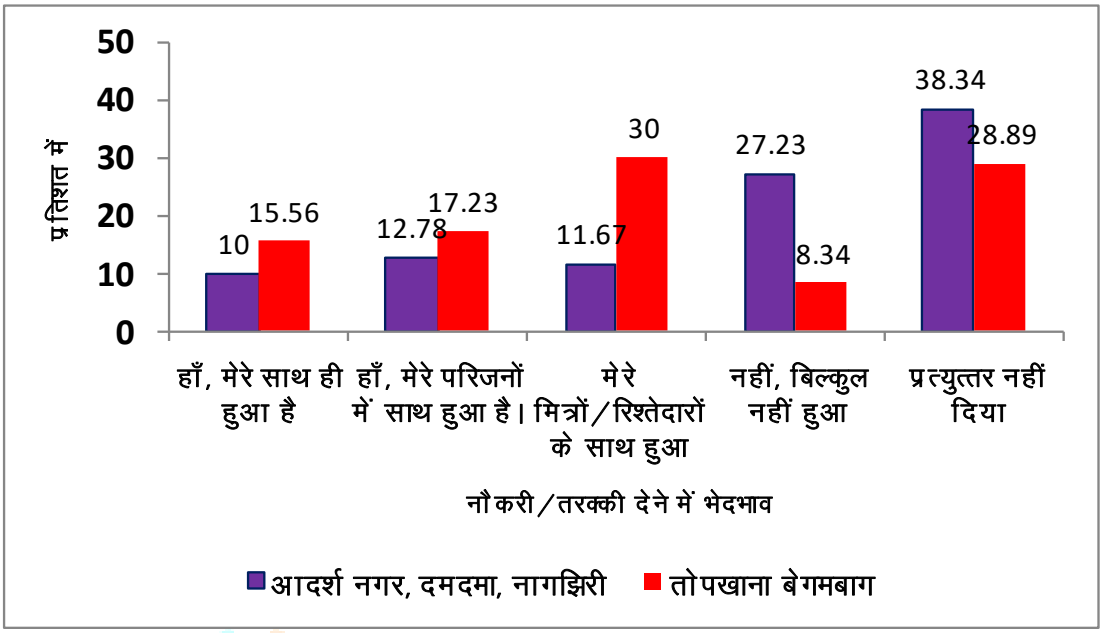


**राजनीति के क्षेत्र में अधिकांश महिलाओं के शोषण से सम्बन्धित प्रतिक्रिया :–**

भारत में यह आम धारणा प्रचलित है कि राजनीति में महिलाओं का शोषण होता है। इस धारणा के प्रति मुस्लिम महिलाओं का दृष्टिकोण जानने का प्रयास किया गया है जो कि निम्नलिखित तथ्य प्राप्त हुए है।

**तालिका 5**

**महिलाओं का राजनीति में आने से होने वाला शोषण के सम्बन्ध प्रतिक्रिया**

| क्रं. | विकल्प | आदर्श नगर, दमदमा, नागझिरी | | तोपखाना बेगमबाग | | कुल योग | कुल प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | पूर्णतया सहमत | 50 | 27.78 | 51 | 28.38 | 101 | 28.05 |
| 2. | आंशिक सहमत | 65 | 36.12 | 74 | 41.12 | 139 | 38.62 |
| 3. | अनिश्चित | 25 | 13.89 | 27 | 15 | 52 | 14.45 |
| 4. | पूर्णतया असहमत | 15 | 8.336 | 17 | 9.45 | 32 | 8.89 |
| 5. | प्रत्युत्तर नहीं दिया | 20 | 11.12 | 11 | 6.12 | 31 | 8.62 |
| | **कुल योग** | **180** | **100%** | **180** | **100%** | **360** | **100%** |

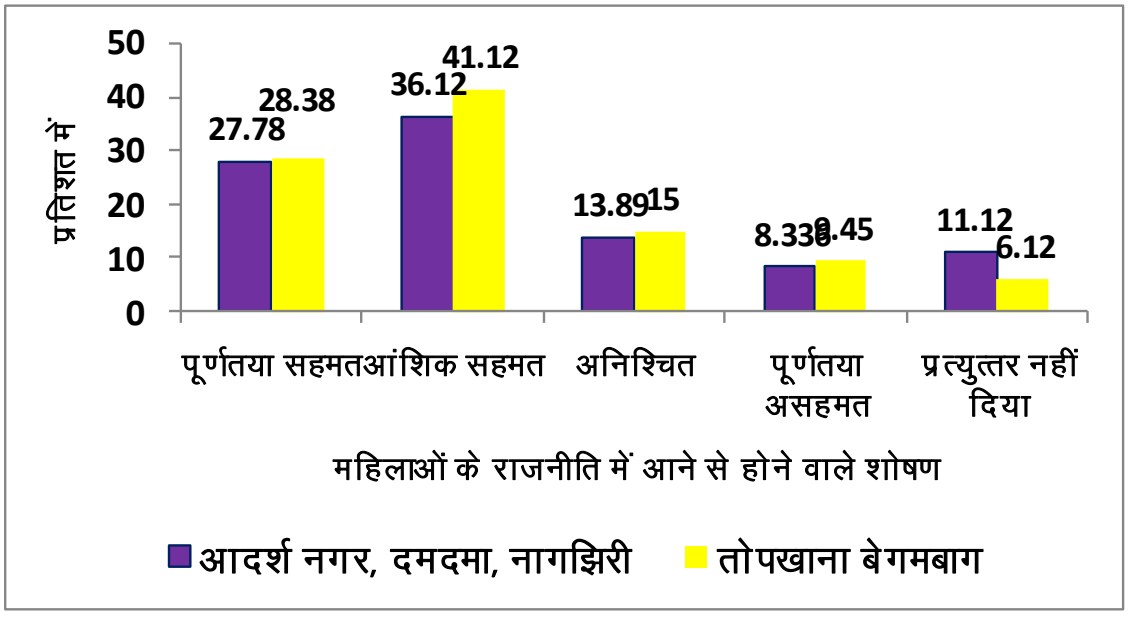

उपर्युक्त तालिका 5 के प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से यह पता चलता है कि आदर्शनगर, दमदमा, नागझिरी क्षेत्र की 27.78 प्रतिशत व तोपखाना, बेगमबाग की 28.34 प्रतिशत मुस्लिम महिलाऐं इस वाक्य पर पूर्णतया सहमत है कि राजनीति में महिलाओं का शोषण होता है। वही आदर्शनगर क्षेत्र की और 36.12 प्रतिशत व तोपखाना, बेगमबाग क्षेत्र की ओर 41.12 प्रतिशत मुस्लिम महिलाएँ इस वाक्य पर आंशिक रूप से सहमत है अर्थात् वे इस वाक्य में संशय रखती है वही आदर्शनगर की 13.89 प्रतिशत व तोपखाना क्षेत्र की 15 प्रतिशत मुस्लिम महिलाऐं ने अनिश्चितता व्यक्त की है और आदर्शनगर के कुल क्षेत्र की 8.33 प्रतिशत व तोपखाना क्षेत्र की 9.45 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने इस कथन पर पूर्णतया असहमत है और कुल महिलाओं में से 8.62 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने इस कथन पर कोई प्रत्युत्तर नहीं दिया है।

**शोध के प्रश्न :–**

- क्या भारत में शरीयत एप्लिकेशन एक्ट में बदलाव नहीं हो सकता हैं?
- क्या भारत में शिक्षा–स्वास्थ्य, रोजगार और स्वतन्त्रता के लिहाज से मुस्लिम सुदाय की महिलाओं के लिए लाभकारी योजना और कानून का पूर्ण रूप से उपयोग हो रहा है?
- क्या भारत में तीन तलाक, निकाह–हलाला और एक से ज्यादा निकाह करना, धर्म की मूल भावना के लिए आवश्यक नहीं हैं?
- क्या भारत में मुस्लिम समुदाय की महिलाओं को राजनैतिक और सामाजिक स्थानों पर पुरूषों के बराबर दर्जा मिल रहा है?

**1. अध्ययन के उद्देश्य :–**

उद्देश्य निम्न है :–

- वर्तमान समय में मुस्लिम महिलाओं में सामाजिक, शैक्षणिक व आर्थिक स्थिति को ज्ञात करना।
- मुस्लिम महिलाओं में राजनीतिक चेतना को ज्ञात करना।
- मुस्लिम समुदाय की महिलाओं के जीवन तथा परिवर्तन की स्थिति को जानना।
- मुस्लिम समाज की महिलाओं के सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन को ज्ञात करना।
- मुस्लिम महिलाओं में अधिकारों के प्रति चेतना को ज्ञात करना।

**निष्कर्ष :–** निष्कर्षतः मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्तर को अनेक कारक प्रभावित करते है। मुस्लिम समाज के आर्थिक पिछड़ेपन के कारण महिलाऐं उत्तरदायी है। एक मुख्य कारण यह भी है कि समाज के शिक्षित होने के लिए महिलाओं का शिक्षित होना अतिआवश्यक होता है। क्योंकि महिलाऐं माता के रूप में अपने सन्तानों में संस्कार व संस्कृति की वाहक होती है। मुस्लिम समाज के परिप्रेक्ष्य में देखा जाये तो मुस्लिम महिलाओं को स्वयं मुस्लिम समुदाय धारा हर उस सुविधा से वंचित रखने का प्रयास किया गया है जो कि उन्हें समाज ने सशक्त व शक्ति प्रदान करती हैं इसके अलावा भारतीय कानूनों का कार्य महिलाओं को संरक्षण प्रदाना करना है तथा विद्वानों का भी मानना है कि पितृसत्तात्मक समाज के कानूनों में महिलाओं के भी पक्ष में होना चाहिए। परन्तु मुस्लिम पर्सनल लॉ है। वे पुरूषों के पक्ष में है। मुस्लिम समुदाय में कभी मेटर, कभी ट्रिपल तलाक व कभी महिलाओं के भरण–पोषण जैसे मुस्लिम महिलाओं के साथ संलग्न मुद्दे उनके विकास भी दौड़ में हतोत्साहित करने का कार्य करती है तो कभी स्वतन्त्र भारत में उनकी पहचान के साथ जुड़ी समस्याएँ जैसे पर्दाप्रथा, अधिक सन्तानोत्पत्ति, अल्प आयु विवाह, रूढ़िवादिता सामाजिक अलगाववृत्ति आदि के कारण मुस्लिम समुदाय ने महिलाओं को दोयम दर्जे का प्राणी रहने में विवश करता है। सही मामलों में मुस्लिम महिलाओं की समस्याओं की प्रकृति को देखा जाये तो मुख्यतः समस्या के समाधान हेतु उनको शिक्षित करने की आवश्यकता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि मुस्लिम समुदाय की महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक सशक्तता एवं स्तर हेतु मुस्लिम महिलाओं से सम्बन्धित मुद्दों को शामिल किया जाना चाहिए।

महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्तर सुधारने के लिए शिक्षा की बहुत आवश्यकता है। वर्तमान समय में मुस्लिम महिलाओं की स्थिति सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्तर के क्षेत्र बहुत पिछड़ी हुई पाई गई है। तथापि भविष्य में आशा से परिपूर्ण है। क्योंकि भारत में बहुत से सरकारी व गैर सरकारी स्तर से मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक की सुधारों के महत्वपूर्ण प्रयास किये जा रहे है।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची :**


- मनोज छापड़िया, "स्त्री शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता", सीरियल्स पब्लिकेशन, नई दिल्ली 2008, पृ. 108.
- आहुजा, राय, "भारतीय सामाजिक व्यवस्था", रावत पब्लिकेशन, जयपुर.
- श्यामसुन्दर, निगम, "मालवा हृदयस्थली अवंतिका", विशाल प्रकाशन, उज्जैन 1968, पृ. 11.
- इशरत खान, "मुस्लिम महिला अधिनियम", राष्ट्र महिला, नई दिल्ली, 7 जून 1992, पृ. 1.
- प्रेमलता, "महिला आरक्षण चुनौतियाँ और सम्भावनाएँ", पोइन्टर पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2015.
- मुक्ता दुबे, "महिला सशक्तिकरण एवं मानव अधिकार", ईशा बुक्स, नई दिल्ली, 2013.
- एम. ए. अंसारी, "महिला और मानवाधिकार", राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली 2003, पृ. 33–36.
- सुनीता वर्मा, "अपराधी महिलाएँ और मुस्लिम समाज", कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स, नई दिल्ली 2006.
- प्रो. आशा शुक्ला, "स्त्री संघर्ष के मुद्दे", हंस पब्लिशर्स, नई दिल्ली, अगस्त 2012.
- एन. यू. शउठा, "मुस्लिम सुरक्षा एवं समाज", ज्योतिलोक प्रकाशन, दिल्ली, 2004.
- महेन्द्र प्रसाद सिंह, "आधुनिक भारतीय सामाजिक तथा राजनीतिक विचार", एस. कुमार पब्लिशर्स, नई दिल्ली 2016.